

Sl. 140, v. 1, a. संगतानि मित्रभावं । = v. 2, b.

श्राद्धमेव मित्रलाभहेतुत्वान्मित्रं यस्य स श्राद्धमित्रो ॥
(*Coulloûca.*)

Sl. 141, v. 1. सा दक्षिणा दानक्रिया सम्भोजनी सह
भुज्यते यथा सा सम्भोजनी = v. 2, a. सा च मैत्री-
प्रयोजनकत्वान्न परलोकफला इह लोके एवास्ते ॥
(*Coulloûca.*)

Sl. 144, v. 1, a. वरं विद्वद्वाङ्मणाभावे गुणवन्मित्रं
भोजयेत् ॥ (*Coulloûca.*)

Sl. 147, v. 2, a. अयं तु मुख्याभावे ॥ (*Coulloûca.*)

Sl. 148, v. 2, a. बन्धुर्मातृघ्नसूपुत्रादिः ॥ (*Coulloûca.*)

Sl. 151, v. 1. जटिलो ब्रह्मचारी = दुर्बलो दुश्च-
र्म्मा । = v. 2. पूगयाज्ञका बहुयाज्ञकाः ॥ (*Coulloûca.*)

Sl. 152, v. 1. चिकित्सकान् देवलकान् ; l'accusatif
est ici régi par le verbe du sloca précédent भोजयेत् . Il me
semble qu'il serait plus naturel d'y substituer le nominatif,
et que la construction du sloca rétabli de la manière suivante
serait plus facile :